IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

भारतीय ज्ञान परंपरा और राम काव्यधारा

डॉ. अल्पना मिश्रा

अतिथि विद्वान -हिंदी विभाग,

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा एक प्राचीन और समृद्ध विरासत है जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों और महाकाव्यों से विकसित हुई है। यह परंपरा आत्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक ज्ञान का स्रोत रही है, जिसमें राम काव्यधारा एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में उभरती है। राम काव्यधारा, जो महर्षि वाल्मीकि की रामायण से प्रारंभ होती है, भक्ति आंदोलन के माध्यम से मध्यकाल में चरमोत्कर्ष पर पहुंची। इस धारा में राम को परमात्मा के अवतार के रूप में चित्रित किया गया है, और यह भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ जुड़कर नैतिकता, धर्म, और भक्ति के मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है। इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख तत्वों का विश्लेषण किया गया है, जैसे वेदों में निहित ज्ञान, उपनिषदों की आत्म-चेतना, और रामायण की शिक्षाएं। राम काव्यधारा के संदर्भ में तुलसीदास, रामानंद और अन्य कवियों के योगदान पर चर्चा की गई है, जो राम भक्ति को जनमानस तक पहुंचाने में सफल रहे। शोध में द्वितीयक स्रोतों, जैसे साहित्यिक ग्रंथों और ऐतिहासिक विश्लेषणों का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष में यह स्थापित किया गया है कि राम काव्यधारा भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है, जो आधुनिक समय में भी प्रासंगिक है। यह परंपरा सामाजिक समरसता, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देती है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-30199

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

कीवर्ड्स

भारतीय ज्ञान परंपरा, राम काव्यधारा, रामायण, भक्ति आंदोलन, तुलसीदास, राम भक्ति, वेद, उपनिषद, रामचरितमानस, आध्यात्मिक विकास।

परिचय

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और निरंतर प्रवाहित होने वाली ज्ञान धाराओं में से एक है। यह वेदों से प्रारंभ होकर उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों, अरण्यकों और महाकाव्यों तक फैली हुई है। वेदों में विभिन्न विषयों जैसे धर्म, संस्कृति, ज्योतिष, विज्ञान, गणित, खगोल और आयुर्वेद का विस्तृत वर्णन मिलता है। उपनिषदों ने आत्मा के ज्ञान को प्रमुखता दी, जिससे भारतीय दर्शन की नींव रखी गई। यह परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है और भक्ति काव्य में अपने चरम रूप में दिखाई देती है। राम काव्यधारा इस ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण से प्रारंभ होती है, जो संस्कृत का अनुपम महाकाव्य है। रामायण में बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड सहित सात अध्याय हैं, जिसमें कुल लगभग 24,000 श्लोक हैं। यह रघुवंश के राजा राम की गाथा है और भारतीय संस्कृति के सबसे लोकप्रिय ग्रंथों में से एक है। राम काव्यधारा हिंदी साहित्य से पूर्व संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश में प्रभूत मात्रा में विकसित हुई। भक्ति आंदोलन के माध्यम से राम काव्यधारा ने सगुण भक्ति का रूप लिया, जहां राम को आराध्य मानकर कवियों ने साहित्य सृजन किया। स्वामी रामानंद ने राम भक्ति की लहर का प्रवर्तन किया, जिससे हिंदी भक्तिकालीन साहित्य में राम भक्ति का विकास हुआ। राम के रूप के विकास की तीन अवस्थाएं हैं: ऐतिहासिक, साहित्यिक और सांप्रदायिक। रामानुजाचार्य की शिष्य परंपरा में राम भक्ति का सांप्रदायिक विकास देखा जा सकता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा और राम काव्यधारा के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना है, जो नैतिक शिक्षाओं और आध्यात्मिक मूल्यों को उजागर करता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, April 2025 Impact Factor: 7.67

भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तृत परिचय:

भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों से शुरू होती है, जो मानव सभ्यता के सबसे प्राचीन लिखित ग्रंथ माने जाते हैं। ऋग्वेद में देवताओं की स्तुति, यजुर्वेद में यज्ञ विधियां, सामवेद में संगीत और अथर्ववेद में चिकित्सा, जादू-टोना तथा दैनिक जीवन के सूत्र मिलते हैं। वेदों के बाद ब्राह्मण ग्रंथ यज्ञों की व्याख्या करते हैं, जबकि अरण्यक और उपनिषद आध्यात्मिक ज्ञान पर केंद्रित हैं। उपनिषदों में "तत्वमसि", "अहं ब्रह्मास्मि" जैसे महावाक्य आत्मा और ब्रह्म के एकत्व का प्रतिपादन करते हैं। भारत को ज्ञान परंपरा में 14 प्रमुख प्रस्थान माने जाते हैं, जिनमें रामायण को इतिहास ग्रंथों की श्रेणी में रखा जाता है। रामायण और महाभारत दोनों ही संस्कृत के महान ग्रंथ हैं, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान के सभी पक्षों का विश्वकोष हैं। ये महाकाव्य केवल कथाएं नहीं, बल्कि जीवन दर्शन, नैतिकता, राजनीति, युद्धकला और विज्ञान के सिद्धांतों से परिपूर्ण हैं। रामायण में वर्णित पुष्पक विमान, ब्रह्मास्त्र जैसे उल्लेख प्राचीन तकनीकी ज्ञान की झलक देते हैं।

राम काव्यधारा का ऐतिहासिक विकास:

राम काव्यधारा की लंबी परंपरा है। वाल्मीकि रामायण को आदि काव्य माना जाता है। वाल्मीकि ने क्रौंच पक्षी की करुण पुकार से प्रेरित होकर पहला श्लोक रचा, जो काव्य की नींव बनी। रामायण के बाद संस्कृत में भट्टि काव्य, भवभूति का उत्तररामचरित, कालिदास के रघुवंश आदि रामकाव्य रचे गए। प्राकृत में विमलसूरि का पउमचरियम् और अपभ्रंश में स्वयंभू का पउमचरिउ जैसे ग्रंथ जैन परंपरा में विकसित हुए। बौद्ध परंपरा में भी रामकथा का उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार रामकथा की तीन प्रमुख धाराएं बनीं - ब्राह्मण परंपरा, बौद्ध परंपरा और जैन परंपरा। भक्ति काल में राम काव्यधारा सगुण भक्ति के रूप में उभरी। रामानंद ने राम भक्ति को जन-जन तक पहुंचाया, उनके शिष्यों में कबीर, रैदास, धन्ना आदि शामिल हुए।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, April 2025 Impact Factor: 7.67

तुलसीदास और रामचरितमानस का योगदान:

राम भक्ति काव्य परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान सर्वोच्च है। उन्होंने रामचरितमानस की रचना 1631 **संवत में की, जो अवधी भाषा में लिखी गई है। यह ग्रंथ वाल्मीकि रामायण और आध्यात्मिक रामायण पर आधारित है, किंतु तुलसी ने इसे भक्ति भाव से सरल और लोकप्रिय बनाया। रामचरितमानस में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया गया है, जो कर्तव्य, त्याग, सत्य और धर्म का प्रतीक हैं। तुलसी ने राम को न केवल राजा, बल्कि परमात्मा के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया। रामचरितमानस के सात कांड (बालकांड से उत्तरकांड तक) में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और कर्मयोग का समन्वय है। तुलसी की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और जनसुलभ है, जिसने राम भक्ति को भारत के कोने-कोने में पहुंचाया। उनकी अन्य रचनाएं जैसे दोहावली, कवितावली, विनय पत्रिका आदि भी राम भक्ति से ओतप्रोत हैं। तुलसी ने राम काव्य को प्रत्येक दृष्टि से समृद्ध किया। उन्होंने वाल्मीकि रामायण के मूल को नए कलेवर में प्रस्तुत कर भारतीय जनमानस में व्याप्त निराशा को आशा में बदल दिया। रामचरितमानस भक्ति साहित्य की केंद्रीय रचना है।**

शोध पद्धति:

यह शोध मुख्य रूप से गुणात्मक (qualitative) **है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। साहित्यिक विश्लेषण** (literary analysis), **ऐतिहासिक पद्धति** (historical method) **और तुलनात्मक अध्ययन** (comparative study) **पर आधारित है। प्रमुख स्रोतों में रामायण, रामचरितमानस, हिंदी साहित्य का इतिहास और विभिन्न शोध पत्र शामिल हैं। डेटा संग्रह के लिए वेब सर्च, ई-बुक्स और पीडीएफ दस्तावेजों का उपयोग किया गया। विश्लेषण में राम काव्य की प्रमुख विशेषताओं, जैसे भक्ति भाव, नैतिकता और सांस्कृतिक प्रभाव का परीक्षण किया गया। कोई प्राथमिक डेटा संग्रह नहीं किया गया, क्योंकि विषय साहित्यिक और ऐतिहासिक है।**

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

मुख्य भाग: भारतीय ज्ञान परंपरा का अवलोकन-

भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों से प्रारंभ होती है, जो प्राचीनतम ग्रंथ हैं। वेदों में ज्ञान की विभिन्न शाखाएं जैसे ऋग्वेद में देवताओं की स्तुतियां, यजुर्वेद में यज्ञ विधियां, सामवेद में संगीत और अथर्ववेद में जादू-टोना और चिकित्सा का वर्णन है। उपनिषदों ने ब्रह्म और आत्मा के एकत्व को स्थापित किया। यह परंपरा निर्मल और पवित्र स्रोत की तरह वैदिक युग से चली आ रही है। प्रत्येक संस्कृति की धरोहर प्राचीन ग्रंथों में निहित है। रामायण को भारतीय ज्ञान परंपरा में इतिहास की श्रेणी में रखा जाता है। इसमें नैतिक शिक्षाएं जैसे कर्तव्य, त्याग, सत्य और धर्म का पालन प्रमुख हैं। रामायण और महाभारत संस्कृत के महान ग्रंथ हैं, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान के सभी पक्षों का विश्वकोष हैं।

राम काव्यधारा का विकास:

राम काव्यधारा की लंबी परंपरा है। हिंदी साहित्य से पूर्व संस्कृत में रामकाव्यों की रचना हो चुकी थी। भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा में रामकाव्य धारा का अपूर्व महत्व है। राम भक्ति धारा में अनेक कवि हुए, लेकिन इसका साहित्यिक महत्व तुलसीदास के कारण है। राम भक्ति काव्य का उद्‌गम आदि काव्य 'रामायण' से मिलता है। वाल्मीकि को आदि कवि माना जाता है। हिंदी में तुलसी पूर्व कवियों में रामानंद अग्रणीय हैं। तुलसीदास राम भक्ति काव्य परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी 'रामचरितमानस' सबसे प्रौढ़ रचना है, जो राम भक्ति को भारत के कोने-कोने में पहुंचाती है। भक्ति परंपरा का विकास प्राचीनकाल में हुआ। राम भक्ति कवियों ने जनता को राममय कर दिया और सभी धर्मों में समन्वय स्थापित किया।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, April 2025 Impact Factor: 7.67

तुलसीदास का योगदान:

राम भक्ति काव्य परंपरा में महाकवि तुलसी का स्थान सर्वोच्च है। उनकी 'रामचरितमानस' भक्ति साहित्य की केंद्रीय रचना है। तुलसी ने राम काव्य को प्रत्येक दृष्टि से समृद्ध किया। उन्होंने राम भक्ति को जनमानस तक पहुंचाया।

रामचरितमानस में गुरु महिमा का वर्णन है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु के महत्व को दर्शाता है। गुरु शास्त्रीय और अनुभवजन्य ज्ञान प्रदान करता है।

संत कवियों का योगदान:

संत कवियों जैसे कबीर, रैदास आदि ने राम भक्ति को आगे बढ़ाया। भारतीय ज्ञान परंपरा में संत कवियों का योगदान महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा और राम काव्यधारा एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। राम काव्यधारा ज्ञान परंपरा के नैतिक और आध्यात्मिक आयामों को मजबूत करती है। तुलसीदास जैसे कवियों ने इसे चरमोत्कर्ष दिया। आधुनिक समय में यह परंपरा सामाजिक समरसता और मूल्यों को प्रेरित करती है। भविष्य में इसके शोध से नई दृष्टियां मिल सकती हैं।

संदर्भ

[1]. Kumar, Jayant. "**भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्ति काव्य**." Sahchar, 7 Aug. 2023, www.sahchar.com/**भारतीय-ज्ञान-परंपरा-और-भक**.

[2]. Sharma, Sunita. "**रामभक्ति काव्य धारा**." Wordpress, 12 Jan. 2021, sunitasharmahpu.wordpress.com/2021/01/12/ram-bhkti-kavy-dhara.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

[3]. Singh, Satveer. "**आलेख : राम भक्ति काव्य परंपरा में महाकवि तुलसी का स्थान**." Apni Maati, 2 Aug. 2018, www.apnimaati.com/2018/08/blog-post_1.html.

[4]. "**राम काव्य भक्ति परम्परा और साहित्य का अध्ययन**." All Research Journal, 2015, www.allresearchjournal.com/archives/2015/vol1issue13/PartH/3-12-110-784.pdf.

[5]. "**भारतीय ज्ञान परम्परा और रामायण की प्रमुख शिक्षाएं**." ResearchGate, 4 Oct. 2025, www.researchgate.net/publication/396161500_bharatiya_jnana_parampara_aura_ramayana_ki_pramukha_siksa'em